शाबान-अल-मोअज़्ज़म

क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में

eBooklet

शाबान-अल-मोअज़्ज़म

क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

नाम किताब ------------ क़ुरान और सुनात की रोशनी शعبان المعظّم

मालिफ़ ------------ ज़ुबेदा अड़ीड़

नाशिर ------------ अलहुदा पबलीकेशनज़

ऐधिशन ------------

तादाद ------------

क़ीमत ------------

तारिख़ इशाअत ----------- अपरेल 2017

मिलने के पते

INDIA
AlHuda Welfare Trust India
Post Box Number 444,Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
Landline: +918040924255. Mobile phone: +91-9535612224
www.alhudapublications.org
www.alhudapk.com **www.farhathashmi.com**

AMERICA
PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
www.alhudaonlinebooks.com

CANADA
5671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
www.alhudainstitute.ca

ENGLAND
14 Wangey Road, Chadwell Heath Romford,
Essex RM6 4AJ London U.K.
+44-20-8599-5277 +44-79-1312-1096
alhudauk.info@gmail.com
alhudaproducts.uk@gmail.com

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ

وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ

اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ

और रसूल ﷺ जो तुम्हें दें लेलो और जिस से तुम्हें रोकें उससे बाज़ आ जाओ और अल्लाह से डरो,बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है "

(الحشر : 7)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	उनवान	सफ़ा नम्बर
1.	माह शाबान और रोज़े	5
2.	शाबान और शबे बरात	7
3.	निस्फ़ शाबान की रात और नुज़ूले क़ुर्आन	7
4.	निस्फ़ शाबान की रात और इबादात	9
5.	निस्फ़ शाबान की रात और मुख़्तलिफ़ रसूमात	12
6.	ज़ईफ़ रिवायात	15
7.	मौज़ू (घड़ी हुई) रिवायात	16
8.	ख़ुलासा	18
9.	मसादर	20

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

शाबान-अल-मोअज़्ज़म

शाबानुलमोअज़्ज़म क़मरी(चान्द)कैलन्डर का आठवां महीना है जो रजब और शाबान के दर्मियान आता है, इस महीने में लोगों के आमाल अल्लाह ताला के सामने पेश किए जाते हैं

माहे शाबान और रोज़े

शाबान वोह महीना है जिसमें रसूल अल्लाह ﷺ ने रमज़ान के बाद सबसे ज़्यादा रोज़े रखे, हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه बयान फ़र्माते हैं

قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، لَمْ اَرَکَ تَصُوْمُ شَهْرًا مِنَ الشُّهُوْرِ مَا تَصُوْمُ مِنْ شَعْبَانَ قَالَ ذٰلِکَ شَهْرٌ يَغْفُلُ النَّاسُ عَنْهُ بَيْنَ رَجَبٍ وَرَمَضَانَ وَهُوَ شَهْرٌ تُرْفَعُ فِيْهِ الْاَعْمَالُ اِلَى رَبِّ الْعَالَمِيْنَ فَاُحِبُّ اَنْ يُرْفَعَ عَمَلِیْ وَاَنَا صَائِمٌ (سنن النسائی)

"मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ मैं ने आप ﷺ को शाबान के अलावा किसी महीने में इतने रोज़े रखते हुए नहीं देखा,आप ﷺ ने फ़र्माया:"रजब और रमज़ान के दर्मियान यह वोह महीना है जिस की फ़ज़ीलत से लोग ग़ाफिल हैं,यही वोह महीना है जिसमें आमाल रब्बुल आलमीन के सामने पेश किए जाते हैं, पस मैं पसंद करता हूं कि जब मेरे आमाल पेश किए जाऐं तो मैं रोज़े की हालत में हूं।"

इस हदीस से मालूम हुआ कि शाबान के पूरे महीने में आमाल अल्लाह ताला के सामने पेश किए जाते हैं,इसके लिए किसी एक दिन को ख़ास करना सही नहीं है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنه फ़र्माती हैं

مَا رَأَيْتُ النَّبِیَّ ﷺ يَصُوْمُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ اِلَّا شَعْبَانَ وَرَمَضَانَ (جامع الترمذی)

"मैं ने नबी अकरम ﷺ को शाबान और रमज़ान के अलावा पै दर पै रोज़े रखते हुए नहीं देखा।"

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा رضي الله عنه फ़र्माती हैं:

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَصُوْمُ حَتّٰى نَقُوْلَ لَا يُفْطِرُ، وَيُفْطِرُ حَتّٰى نَقُوْلَ لَا يَصُوْمُ، فَمَا رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ اسْتَكْمَلَ صِيَامَ شَهْرٍ اِلَّا رَمَضَانَ وَمَا رَأَيْتُهُ اَكْثَرَ صِيَامًا مِنْهُ فِيْ شَعْبَانَ (صحیح البخا ری)

"रसूल अल्लाह ﷺ रोज़े रखते चले जाते यहां तक कि हम कहते आप ﷺ रोज़ा रखना ना छोड़ेंगे और आप ﷺ रोज़े छोड़ते चले जाते यहां तक कि हम कहते कि आप ﷺ कभी रोज़ा ना रखेंगे,मैं ने रसूल अल्लाह ﷺ को रमज़ान के अलावा किसी माह के मुकम्मल रोज़े रखते नहीं देखा और मैं ने आपको शाबान के अलावा किसी महीने में कसरत से रोज़े रखते नहीं देखा।"

इन अहादीस से माह शाबान में कसरत से रोज़े रखने की एहमियत का पता चलता है। फिर भी पूरे शाबान के रोज़े सिर्फ़ नबी ﷺ के साथ ही ख़ास थे, जब कि उम्मत को आधे शाबान के बाद आमतौर पर रोज़ा रखने से मना किया गया है,अलबत्ता वो लोग इसमे शामिल नहीं जो अय्यामे बीद या पीर और जुमेरात के रोज़े रखते हों या गुज़िशता रमज़ान के क़ज़ा रोज़े रखना चाहते हों।

(سنن ابن ماجہ)

शाबान ओर शबेबरात

निस्फ़ शाबान की रात आम तौर पर शबेबरात के नाम से मनाई जाती है, जिस की कोई दलील क़ुरआन व सुन्नत में मौजूद नहीं है नीज़ इस की फ़ज़ीलत के बारे में किसी रिवायत में भी लैलतुलबराअत का नाम नहीं मिलता,बराअत के लफ़ज़ी मानी इज़हार बेज़ारी के हैं जैसा कि अल्लाह ताला ने सूरह तौबा में फ़र्मायाः

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ... (التوبة : 1)

“अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ से बेज़ारी का इज़हार है।"

इस आयते मुबारका में बराअत का लफ़्ज़ मुशरिकीन मक्का से बेज़ारी के लिए इस्तेमाल हुआ है। बिल फ़रज़ इस लफ़्ज़को इस रात की वजह तस्मियाह तसलीम कर भी लिया जाए तो फिर सवाल यह पैदा होता है कि कौन किस से बेज़ारी का इज़हार कर रहा है और इसका निस्फ़ शाबान की रात से क्या ताल्लुक़ है ?

निस्फ़ शाबान की रात और नुज़ूल क़ुरआन

बाज़ लोग निस्फ़ शाबान की रात की फ़ज़ीलत साबित करने के लिए सूरत अलदुख़ान की इन आयात का हवाला देते हैं

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِیْنَ o فِیْهَا یُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِیْمٍ (الدخان : 3-4)

“बेशक हमने इस (क़ुरआन)को एक मुबारक रात में उतारा है,बेशक हम ख़बरदार करने वाले हैं,इस(रात)में हर मोहकम काम का फ़ैसला किया जाता है।"

लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि क्या वाक़इ इन आयात में लैलतुल मुबारका से मुराद निस्फ़ शाबान की रात ही है या इस से मुराद कोई और रात है। लैलतुल मुबारका के बारे में मुफ़स्सिर इब्ने कसीर(र) लिखते हैं:

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"इस मुक़ाम पर अल्लाह ताला ने क़ुरआन मजीद के बारे में फ़र्माया है कि उसने इसे मुबारक रात में नाज़िल फ़र्माया और मुबारक रात से मुराद लैलतुलक़दर है जैसा कि इर्शादे बारी ताल है ○ ا (القدر:١) اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدر बेशक हमने इस(क़ुरआन)को शबेक़दर में नाज़िल किया।"और यह लैलतुलक़दर रमज़ान की रात थी जैसा के अल्लाह ताला ने फ़र्माया:

شَهرُ رَمَضَانَ الَّذِی اُنزِلَ فِیهِ القُرآنُ(البقرة:١٨٥

रमज़ान वोह महीना है जिसमें क़ुरआन नाज़िल किया गया।"
(तफ़्सीर इब्नेकसीर,स:408)

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर(र)की इस वज़ाहत से मालूम हुआ कि लैलत मुबारका से मुराद लैलतुलक़दर है नाकि निस्फ़ शाबान की रात क्योंकि क़ुरआन मजीद लैलतुलक़दर में नाज़िल हुआ और लैलतुलक़दर रमज़ान के आख़री अशरा की एक रात का नाम है,नीज़ लैलतुलक़दर ही वोह रात है जिसमें तमाम उमूर के फ़ैसले किए जाते हैं। रसूल अकरम ﷺ के इर्शादात के मुताबिक़ भी लैलतुलक़दर को रमज़ान के आख़री अशरे की ताक़ रातों में तलाश करना चाहिए।

हज़रत अनसرضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मुझसे हज़रत उबादाह बिन सामितرضي الله عنه ने बयान किया कि आप ﷺ इसलिए निकले के हमें शबेक़दर के बारे में बताऐं, इतने में दो मुसलमान लड़ पड़े तो आपने फ़र्माया: "मैं तुम्हें शबेक़दर के बारे में बताने के लिए निकला था लेकिन फ़ुलां के लड़ने से भूल गया और शायद तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम उसको 21,23,25,27,29 में तलाश करो।"(सही बुख़ारी)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा رضي الله عنه फ़र्माती हैं आप ﷺ रमज़ान के आख़री अशरे में ऐतकाफ़ करते ओर फ़र्माते: "रमज़ान के आख़री अशरे में शबेक़दर तलाश करो।" (सही बुख़ारी)

सूरह अल्दुख़ान की आयात की तफ़्सीर और सही अहादीस मुबारका से लैलतुलक़दर के रमज़ान में होने की वज़ाहत के बाद यह दावा दुरुस्त नहीं कि लैलतुलक़दर निस्फ़ शाबान की रात है या लैलतुलक़दर और लैलतमुबारक दो मुख़्तलिफ़ रातें हैं।

निस्फ़ शाबान की रात और इबादात

निस्फ़ शाबान की रात के हवाले से बाज़ इबादात का ऐहतामाम किया जाता है जो शरअन साबित नहीं हैं,यह इबादात नबी अकरम صلی اللہ علیہ وسلم और सहाबा करामرضي الله عنه के दौर के बाद की ईजाद हैं,सहाबा करामرضي الله عنه उम्मत के बेहतरीन लोग थे, अगर इस तरह की इबादात पसंदीदा होतीं तो वोह उनको अपनाने में पहल करते

हाफ़िज़ इब्ने रजब लिखते हैं "निस्फ़ शाबान की रात एहले शाम के ताबईन में से ख़ालिद बिन मादान, मिक्होल और लुक़मान बिन आमिर वग़ैराह बड़ी मेहनत से इबादत करते थे,इन्हीं ताबईन से लोगों ने इस रात की ताज़ीम और फ़ज़ीलत अख़ज़ करली और यह भी कहा गया कि इस बारे में उन को इस्राइली रिवायात मिली थीं,बाज़ लोगों ने उसकी फ़ज़ीलत साबित करने की कोशिश की जिनमे बसरा के कुछ इबादत गुज़ार थे,मगर उल्मा हिजाज़ की अक्सरियत ने इसका इन्कार किया, जिनमें इमाम मालिक,अता इब्ने अबी मुलेका और दीगर फ़ुक़हाऐ मदीना शामिल थे,सब ही ने इसे बिदअत कहा।"
(शाबान की बिदअतें अज़ मुश्ताक़ एह्मद करीमी)

इबादात के लिए मख़सूस दिनों और रातों का ज़िक्र वाज़ेह तौर पर क़ुर्आन और अहादीस से मिलता है, मसलन मोहर्रमुलहराम में यौम आशुरा,अशराह ज़ुलहिज्जा,यौमे अरफ़ा,यौमे अलनहर,अय्यामे तशरीक़,माह रमज़ान, लैलतुलक़दर,यौमे जुमा,अयाम बीद यानी हर क़मरी(चांद)महीने की 13,14, 15 तारीख़ वग़ैरा मगर शबेबरात की इबादत का कहीं भी ज़िक्र नहीं मिलता।

अस्सलातुलअलफ़िया

निस्फ़ शाबान की रात की जाने वाली एक इबादत अस्सलातुलअलफ़िया है,यह सौ रकअत नमाज़ है और हर रकअत में सूरह इख़्लास दस बार पढ़ी जाती है,इस तरह सूरह इख़्लास की कुल तादाद एक हज़ार बार हो जाती है।

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

बररे सग़ीर पाक व हिन्द में इस नमाज़ का बहुत ऐहतमाम किया जाता है, लोग सूरज डूबने से कुछ पहले ही मस्जिद में जमा होना शुरू हो जाते हैं, फ़र्ज़ नमाज़ें अदा ना करने वाले भी यह नमाज़ पढ़कर समझते हैं कि इस रात की बरकत से उनके पिछले तमाम गुनाह और ग़लतियां माफ़ हो जाऐंगी और उनकी उमर,कारोबार और रिज़्क़ में बरकत हो जाएगी।

हालांकि रसूल अल्लाह ने इस रात में कोई ख़ास नमाज़ नहीं पढ़ी और ना ही ख़ुलफ़ाए राशदीन ने और ना ही अईमा दीन ने इमाम अबु हनीफ़ा, इमाम मालिक,इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, इमाम सोरी,इमाम ओज़ाई और इमाम लैस(र)में से किसी ने इसे क़ुबूल किया है।

नीज़ इस बारे में जो रिवायात मनक़ूल हैं इत्तेफ़ाक़ के साथ तमाम एहले इल्म और मोहददिसीन के नज़दीक मौज़ू हैं,उसकी शुरूवात के बारे में अल्लामा मुक़ददसी(र)फ़र्माते हैं:" हमारे यहां बैतुलमक़दस में ना सलात अररग़ाइब (जो रजब के महीने में पहला जुमा को अदा की जाती है)का रिवाज था ना सलाते शाबान का,सलाते शाबान का रिवाज हमारे यहां उस वक़्त हुआ जब 448 हिजरी में एक शख़्स "इब्ने अबी अलहमरा " नाबलस से बैतुलमक़दस आया,वोह बहुत अच्छा क़ुरआन पढ़ता था,वोह शाबान की पंदरवीं तारीख़ को मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ने खड़ा हुआ,उसकी हुस्ने क़िरात से मुतास्सिर होकर एक शख़्स उसके पीछे खड़ा हो गया,फिर एक और फिर एक और,इस तरह काफ़ी लोग उस के पीछे खड़े हो गए,फिर वोह दूसरे साल भी पंदरवीं शाबान की शब आया और हस्बे साबिक़ लोगों ने उसके पीछे नमाज़ पढ़ी,फिर साल बसाल इसी तरह होता रहा और यह बिदअत ज़ोर पकड़ गई,बल्कि घर घर पहुंच गई और अब तक जारी है।"
(शाबान की बिदअतें अज़ मुशताक़ एहमद करीमी)

मुल्ला अली क़ारी सलातुलअलफ़िया को मौज़ू क़रार देते हैं, शेख़ अब्दुल रेहमान मुबारकपुरी कहते हैं के निस्फ़ शाबान के रोज़े की फ़ज़ीलत में मुझे कोई सही और मरफ़ू हदीस नहीं मिली।

(تحفۃ الاحوذی 505/3)

हक़ीक़त ये है कि इस तरह के इज़ाफ़े असल दीन में होते रहते हैं और रफ़्ता-रफ़्ता दीन का हिस्सा बन जाते हैं,यूं दीन इस्लाम की असल शक्ल मस्ख़ होकर रह जाती है।

सलामी रोज़ाः

इस्तक़्बाले रमज़ान के तौर पर,सलामी रोज़ा शाबान के आख़िर में रखा जाता है,यह रोज़ा ना अल्लाह के रसूल صلی اللہ علیہ وسلم ने रखा और ना किसी और को रखने का हुक्म दिया,हज़रत अबु हुरैराह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़र्मायाः"जब निस्फ़ शाबान बाक़ी रह जाए तो उसके बाद रोज़ा ना रखो।"(जामे तिरमिज़ी)

हज़रत अबू हुरैराह رضي الله عنه से रिवायत है कि आप ﷺ ने फ़र्मायाः" रमज़ान से एक या दो दिन पहले कोई शख़्स रोज़ा ना रखे अलबत्ता वोह शख़्स जो अपने मामूल के मुताबिक़ रोज़े रखता आरहा है वोह रख सकता है।"(सही बुख़ारी)

यानी किसी का फ़र्ज़ रोज़ा रहता हो तो वोह रख ले या वोह शख़्स जो पीर या जुमेरात के मसनून रोज़े रखता है और वोह दिन रमज़ान से पहले आ रहे हों तो ऐसा शख़्स रोज़ा रख सकता है।"

ख़ास जिक्र व हलक़े:

निस्फ़ शाबान की रात लोग मस्जिदों में हलक़े बनाकर बैठते हैं और हर हलक़े का एक ज़िम्मेदार होता है,दूसरे लोग ज़िक्र और तिलावत में उसका पालन करते हैं जैसे कलमा तय्यबा या दूसरे ज़िक्र को ख़ास लय के साथ गाकर पढ़ते हैं,यह ख़ुद बनाए हुए अमल हैं जिनकी दलील क़ुरआन व सुन्नत में मौजूद नहीं है।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

निस्फ़ शाबान की रात और मुख़्तलिफ़ रसूमात

कबरिस्तान जानाः

निस्फ़ शाबान की रात के बारे में एक बात मशहूर करदी गई है कि रसूल अल्लाह ﷺ इस रात बक़ीह के कब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए और दलील के तौर पर नीचे दी गई रिवायत पेश की जाती है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा رضي الله عنه से रिवायत है:"जब रसूल अल्लाह ﷺ की बारी मेरे पास होती तो आख़िर रात में बक़ी(कब्रिस्तान)की तरफ़ निकलते और कहते

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ وَاَتَاكُمْ مَا تُوْعَدُوْنَ غَدًا مُؤَجَّلُوْنَ وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ (صحيح مسلم)

"सलाम हो तुम पर ए घर वालो मोमिनो! जिस कल का तुमसे वादा था कि तुम्हारे पास आने वाला है,वोह तुम्हारे पास आ चुका और अगर अल्लाह ने चाहा तो हम तुमसे मिलने वाले हैं,ऐ अल्लाह! बक़ी ग़रक़द वालों को बख़्शदे।"

इस हदीस से रसूल अल्लाह ﷺ का निस्फ़ शाबान की रात को ख़ासतौर पर क़ब्रिस्तान जाने का कोई सुबूत नहीं मिलता सिर्फ़ यह पता चलता है कि आप ﷺ अपने मामूल के मुताबिक़ क़ब्रिसतान गए थे।

क़ब्र पर लकड़ी लगानाः

क़ब्र पर लकड़ी गाढ़कर मुरदे के हस्बे हाल कपड़े पहनाए जाते हैं और उससे बातें की जाती हैं, दुआऐं और गिरया ज़ारी की जाती है।इन आमाल का दीन से कोइ ताल्लुक़ नहीं है।

रूहों की वापसी:

बाज़ लोग अक़ीदा रखते हैं कि ख़ानदान की मय्यतों की रूहें इस रात अपने घर आती हैं और देखती हैं कि उनके लिए क्या पकाया गया है,इसलिए लोग मिठाइयां,हलवे और दूसरी चीज़ें बनाते हैं और इनको घरों पर ख़ास जगहों पर रखा जाता है ताकि मय्यत की रूह वहां आकर ख़ुश हो,

इसी तरह घरों को साफ़ किया जाता है,यह मन घड़त और बे बुनियाद बातें हैं क्योंकि क़ुर्आन और सुन्नत के मुताबिक़ नेक रूहें इल्लीयीन में और बुरी रूहें सिज्जीन में होती हैं,इन रूहों का यह घेरा तोड़कर दुनिया में आजाना गोया अल्लाह के क़ानून की ख़िलाफ़ वरज़ी है जैसा कि क़ुरआन मजीद में आता है

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (المؤمنون:100)

"और उनके पीछे दोबारा उठाए जाने के दिन तक एक पर्दा है।"

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि जब तक शबे बरात के मौका पर ख़त्म की रस्म अदा ना की जाए मय्यत का शुमार मुर्दों में नहीं होता और उसकी रूह मोअल्लक़(लटकी)रहती है,यह भी एक ग़लत अक़ीदा है जिसका सुबूत क़ुरआन मजीद या अहादीस मुबारका में नहीं मिलता है।

मुरदों की ईदः

बाज़ लोग निस्फ़ शाबान को मुरदों की ईद कहते हैं, उनके मुताबिक़ ईदुलफ़ित्र ज़िन्दों की ईद जबकि शबे बरात मुर्दों की ईद है,अगर कोई मर जाए तो शबे बरात की फ़ातिहा दिलाए बग़ैर कोई ख़ुशी का दिन नहीं मनाया जा सकता यह भी एक मन घड़त बात है।

हलवा पकानाः

निस्फ़ शाबान के दिन हलवा पकाकर तक़सीम करना भी एक ज़रूरी अमर बन चुका है और इस काम में अवाम की इतनी बड़ी तादाद शामिल है कि अक़्ल हैरान रह जाती है। दलील यह दी जाती है कि रसूल अल्लाह ﷺ के दाँत मुबारक जंग ओहद में शहीद हुए तो उनको हलवा बनाकर खिलाया गया हालांकि जंग ओहद शव्वाल में हूई और हलवा शाबान में पकाया जाता है।

बाज़ लोग कहते हैं के हज़रत अवेस क़रनी(र)ने रसूल अल्लाह ﷺ की मोहब्बत और इत्तेबा में दाँत शहीद किए और उन्होंने हलवा खाया,इस रिवायत में भी कोइ सच्चाई नहीं है, इस तरह की बे बुनियाद बातों की एक लम्बी लिस्ट पाई जाती है।

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

चिराग़ां व आतिश बाज़ीः

घरों,छतों,मस्जिदों,दरख़्तों ओर क़ब्रिस्तानो वग़ैरह पर चिराग़ां करना, क़न्दीलें रोशन करना,पटाख़े छोड़ना,आतिश बाज़ी करना और पूरी रात खेल तमाशे के साथ जागकर गुज़ारना,निस्फ़ शाबान की रात का एक मामूल बन चुका है,यह हिन्दुओं की दीवाली,मजूसियों की आतिश परस्ती की नक़ल के सिवा कुछ नहीं है, जब के रसूल अल्लाह ﷺ ने ग़ैर मुसलिम क़ौमों की मुशाबेहत से सख़्ती से मना करते हुए फ़र्मायाः

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ (سنن أبي داؤد)

“जो किसी क़ौम की मुशाबेहत इख़्तियार करता है वोह उन्हीं में से है।"

ज़ईफ़ रिवायात

निस्फ़ शाबान की रात की फ़ज़ीलत से मुताल्लिक़ जो रिवायात बयान की जाती हैं वोह निहायत ज़ईफ़ हैं जिनसे इस्तदलाल करना किसी तौर दुरुस्त नहीं, मसलन,

हज़रत अनसرضي الله عنه फ़र्माते हैं के नबी अक्रम ﷺ से दरयाफ़्त किया गया कि माहे रमज़ान के बाद किस माह में रोज़ा रखना अफ़ज़ल है,आप ﷺ ने फ़र्मायाःमाहे रमज़ान की ताज़ीम में शाबान का रोज़ा,फिर दरयाफ़्त किया के किस माह में सदक़ा व ख़ैरात करना अफ़ज़ल है?आप ﷺ ने फ़र्मायाःमाहे रमज़ान में सदक़ा करना।

इमाम इब्ने अलजोज़िया ने इस हदीस को सही नहीं कहा क्योंकि इसका एक रावी सदक़ा बिन मूसा दुरुस्त नहीं इब्ने हुब्बान ने कहा की सदक़ा जब रिवायत करता है तो हदीसों को उलट देता है,इमाम तिरमिज़ी(र)ने कहा कि मुहद्दिसीन के नज़दीक सदक़ा क़वी नहीं,इसके अलावा यह रिवायत अबु हुरैराहرضي الله عنه की सही हदीस की मुख़ालिफ़ है जिसमें बयान है कि माहे रमज़ान के बाद अफ़्ज़ल रोज़ा मुहर्रम का है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशाرضي الله عنه से रिवायत है कि मैं ने एक रात नबी अक्रम ﷺ को बिस्तर से गुम पाया,मैं आप ﷺ की तलाश में निकली तो देखा आप ﷺ बक़ी में हैं,मुझे देख कर नबी अकरम ने फ़र्माया क्या तू इस बात का ख़ौफ़ ख़ाती है कि तुझ पर अल्लाह और उसका रसूल ﷺ ज़ुल्म करेंगे? मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ ! मैं ने समझा कि आप ﷺकिसी दुसरी बीवी के पास तशरीफ़ ले गए हैं:नबी अकरम ﷺ ने फ़र्मायाःअल्लाह ताला माहे शाबान की निस्फ़ शब को आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़र्माता है और क़बीला कल्ब की बक्रियों के बालों की तादाद से भी ज़्यादा लोगों की बख़्शिश फ़र्मा देता है।

इमाम तिरमिज़ी(र)ने कहा के उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयशाرضي الله عنه की इस हदीस को हम हिजाज़ की सनद से जानते हैं और मैं ने इमाम बुख़ारी(र)से सुना है कि यह हदीस ज़ईफ़ है,इमाम दारक़ुतनी(र)ने कहा यह हदीस कई सनदों से मरवी है और इसकी सनद मुज़्तरिब और ग़ैर साबित है, अल्लामा अलबानी(र)ने भी इसे ज़ईफ़ क़रार दिया है।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मौज़ू रिवायात

बहुत सी रिवायात तो मौज़ू यानी मनघड़त हैं जिनकी निस्बत रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ करना भी गुनाह है।

रजब अल्लाह का महीना है,और शाबान मेरा महीना है और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है।

हाफ़िज़ अबु अलफ़ज़्ल बिन नासिर(र)ने इसके एक रावी अबु बक्र नक्क़ाश के बारे में लिखा है के वोह दज्जाल और हदीस घड़ने वाला है,इब्ने वहया, अल्लामा इब्ने अलजोज़िया, अल्लामा सग़ानी और अल्लामा स्युती ने इसे मौज़ू क़रार दिया है।

ऐ अली! जो शख़्स निस्फ़ शाबान को सौ रकअत नमाज़ पढ़े और उसकी हर रकअत में सूरह अलफ़ातिहा और सूरह इख़्लास दस मर्तबा पढ़े,ऐ अली कोइ बन्दा नहीं है जो इन नमाज़ों को पढ़े मगर अल्लाह ताला उसकी हर हाजत और ज़रूरत को जो वोह उस रात मांगे पूरी कर देता है।

अल्लामा इब्ने अलजोज़िया ने लिखा है कि इस हदीस के मौज़ू होने में मुझे कोई शक व तरद्दुद नहीं और इस हदीस के तीनों तरक़ में मजहूल और इन्तिहाई दरजे के ज़ईफ़ रावी हैं,अल्लामा इब्ने अलक़य्यम अल्लामा सयुती और अल्लामा शोकानी ने भी इसे मौज़ू क़रार दिया है।

जो शख़्स निस्फ़ शाबान को बाराह रकअत नमाज़ पढ़े जिसमें हर रकअत में सूरह इख़्लास तीस बार पढ़े तो वोह नमाज़ मुकम्मल करने से पहले अपना ठिकाना जन्नत में देख लेगा।

अल्लामा इब्ने अलक़य्यम,अल्लामा सयुती और अल्लामा इब्ने अल्जोज़िया ने इसे मौज़ू क़रार दिया है, इसके रावियों में एक पूरी जमाअत मजहूल लोगों की है।

हज़रत अली رضي الله عنه बिन अबु तालिब से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़र्माया: "जब निस्फ़ शाबान हो तो तुम इस रात क़याम करो और दिन में रोज़ा रखो,क्योंकि इस दिन अल्लाह ताला सूरज डूबने के बाद आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़र्माता है और कहता है कि कोई है मग़फ़िरत का तलबगार कि मैं उसे बख़्श दूं !

कोइ रोज़ी का ख़्वास्तगार कि मैं उसे रोज़ी दूं ! कोई है मसाइब का गिरफ़्तार कि मैं उसे आफ़ियत दुं और कोई है....और कोई है.....यहां तक कि फ़ज्र तुलू हो जाए।

अल्लामा बोसीरी(र) के मुताबिक़ इसके रावियों में अबुबक्र बिन अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन अबी सब्राह है जिसके बारे में इमाम एहमद, इब्ने मुईन और हाफ़िज़ इब्ने हज्र वग़ैराह ने कहा कि यह हदीसें घड़ा करता था।

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

ख़ुलासा

इन रिवायात को पढ़ने के बाद बख़ूबी अन्दाज़ा किया जा सकता है जशने शबेबरात और इसमें की जाने वाली इबादात की शरई हैसियत क्या है

हक़ीक़त ये है कि तमाम इबादात का असल मक़्सद अल्लाह की ख़ुशी और रज़ा हासिल करना है, हमें बिल्कुल इख़्तियार नहीं कि हम ख़ुद से दीन में, किसी इबादत को किसी ख़ास वक़्त या तरीक़े से शामिल कर लें,जिसका हुक्म अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ के ज़रिए हमें नहीं दिया,अगर हम ऐसा करें तो हम अल्लाह के दीन को या नबी अकरम ﷺ की लाई हूई शरियत को नामुकम्मल समझने की अज़ीम ग़लती कर रहे हैं और एक बिदअत के मुरतकिब हो रहे हैं (نعوذ بالله من ذلك)

इर्शाद बारी ताला है।

اَمۡ لَهُمۡ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوۡا لَهُمۡ مِّنَ الدِّيۡنِ مَا لَمۡ يَاۡذَنۡۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ (الشوریٰ:21)

"क्या उनके लिए ऐसे शरीक हैं जिन्हों ने उनके लिए ऐसा दीन मुक़र्रर कर दिया जिसकी अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी है।"

लेहाज़ा ज़रूरी है कि जिस वक़्त, तरीक़े, तादाद और अन्दाज़ में रसूल अल्लाह ने इबादत की या करने का हुक्म दिया हम उनको उसी तरह अदा करें।

इर्शादे बारी ताला हैः

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُقَدِّمُوۡا بَيۡنَ يَدَىِ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ (الحجرات:1)

"ए ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे ना बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो,यकीनन अल्लाह ताला सुनने वाला और जानने वाला है।"

नबी अकरम ﷺ ने फ़र्मायाः

كُلُّ مُحۡدَثَةٍ بِدۡعَةٌ وَكُلُّ بِدۡعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ (سنن النسائی)

"हर नया काम दीन में बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही आग में जाने वाली है।"

इबादात में आपके ﷺ तरीक़े की मिनोअन पैरवी में ही हमारी दीन व दुनिया की कामयाबी और आख़िरत में निजात का दारोमदार है।अल्लाह ताला ने फ़र्मायाः

وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوۡلُ فَخُذُوۡهُ ۚ وَمَا نَهٰكُمۡ عَنۡهُ فَانۡتَهُوۡا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ (الحشر:7)

और रसूल जो तुम्हें दें लेलो और जिससे तुम्हें रोकें उससे बाज़ आ जाओ और अल्लाह से डरो,बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।"

ऐसी बहुत सी ग़ैर तहक़ीक़ शुदा बातें हमारे दीन में दाख़िल हो चुकी हैं, अक्सर जिहालत, लाइल्मी या नादानी के सबब उन्हें रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ मन्सूब किया जाता है,और बाज़ औक़ात जानते बूझते ग़ुल्व करते हुए ऐसा किया जाता है,इनसे बचना बहुत ज़रूरी है,क्योंकि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़र्मायाः

مَنۡ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلۡيَتَبَوَّأۡ مَقۡعَدَهُ مِنَ النَّارِ (صحيح البخاری)

"जिसने जानबूझकर मुझपर झूट घड़ा उसको चाहिए कि अपना ठिकाना जहन्नम में बनाले।"

अल्लाह ताला हम सबको असल दीन पर अमल की तौफ़ीक अता फ़र्माए। आमीन

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मसादर

1. القرآن الکریم

2. صحیح البخاری،محمد بن اسماعیل البخاریؒ،دارالسلام پبلشرز

3. جامع الترمذی،محمد بن عیسیٰ الترمذی،دارالسلام پبلشرز

4. سنن النسائی،حافظ ابی عبدالرحمن بن علی ابن سنان النسائی،دارالسلام پبلشرز

5. तफ़सीर इब्न कसीर(उर्दु),इमादुद्दीन हाफ़िज़ इब्ने कसीर(र),दारुस्सलाम पब्लिशरज़

6. शबे बरात एक तहक़ीक़ी जाइज़ाहःहबीबुर रहमान सिद्दीक़ कान्धेल्वी,अन्जुमन उस्वएहुस्ना,कराची,पाकिस्तान

7. शाबान की बिदअतें: मुशताक़ एहमद करीमी,अलहिलाल एजुकेशनल सोसाइटी कटीहार,बिहार इन्डिया

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नबी अक्रम ﷺ ने फ़र्माया:

كُلُّ مُحُدَثَةٍ بِدُعَةٌ

وَكُلُّ بِدُعَةٍ ضَلَالَةٌ

وَكُلُّ ضَلَالَةٍ فِى النَّارِ

"हर नया काम दीन में बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही आग में जाने वाली है।"

(سنن النسائی)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه बयान फ़र्माते हैं:

قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، لَمْ اَرَکَ تَصُوْمُ شَهْرًا مِنَ
الشُّهُورِ مَا تَصُوْمُ مِنْ شَعْبَانَ قَالَ ذٰلِکَ شَهْرٌ يَغْفُلُ
النَّاسُ عَنْهُ بَيْنَ رَجَبٍ وَرَمَضَانَ وَهُوَ شَهْرٌ تُرْفَعُ فِيْهِ
الْاَعْمَالُ اِلَى رَبِّ الْعَالَمِيْنَ فَاُحِبُّ اَنْ يُرْفَعَ عَمَلِیْ
وَاَنَا صَائِمٌ

" मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ मैंने आप ﷺ को शाबान के अलावाह किसी महीने के इतने रोज़े रखते हुएनहीं देखा,आप ﷺ ने फ़र्माया: "रजब और रमज़ान के दर्मयान यह वोह महीना है जिसकी फ़ज़ीलत से लोग ग़ाफिल हैं, यही वोह महीना है जिसमें आमाल रब्बुलआलमीन के सामने पेश किए जाते हैं,पस मैं पसन्द करता हूं के जब मेरे आमाल पेशकिए जाएें तो मैं रोज़े की हालत में हूं।"

(سنن النسائی)

04010058

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.